

﴿ ٢٣ سُورَةُ النُّورِ مَكِّيَّةٌ ١٠٢ ﴾ ﴿ ٩ رُكُوعَاتُهَا ٩ ﴾ ﴿ ٢٢ آيَاتُهَا ٢٢ ﴾

सूरए नूर मदनिव्या है, इस में चौंसठ आयतें और नव रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ

येह एक सूत है कि हम ने उतारी और हम ने उस के अहकाम फर्ज किये² और हम ने उस में रोशन आयतें नाज़िल फरमाई कि

تَذَكَّرُونَ ① الزَّانِيَةَ وَالزَّانِيَ فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً

तुम ध्यान करो जो औरत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े

جَلْدَةٍ ② وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ

लगाओ³ और तुम्हें उन पर तर्स न आए **اللَّهُ** के दीन में⁴ अगर तुम ईमान लाते हो

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ③ وَلِيَشْهَدَ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ④

اللَّهُ और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक्त मुसलमानों का एक गुरौह हाज़िर हो⁵

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ

बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द

1 : सूरए नूर मदनिव्या है, इस में नव रुकूअ चौंसठ आयतें हैं। 2 : और उन पर अमल करना बन्दों पर लाज़िम किया। 3 : येह खिताब हुक्काम को है कि जिस मर्द या औरत से जिना सरज़द हो उस की "हद" येह है कि उस के सो 100 कोड़े लगाओ, येह "हद" हुर गैर मुहसन (आज़ाद कुंवारे) की है क्यूं कि हुर मुहसन (आज़ाद शादी शुदा) का हुक्म येह है कि उस को रज्म किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ में बारिद है कि माइज़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को ब हुक्मे नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** रज्म किया गया, और मुहसन वोह आज़ाद मुसलमान है जो मुकल्लफ हो और निकाहे सहीह के साथ सोहबत कर चुका हो ख़ाह एक ही मरतबा, ऐसे शख्स से जिना साबित हो तो रज्म किया जाएगा और अगर इन में से एक बात भी न हो मसलन हुर न हो या मुसलमान न हो या अकिल बालिग न हो या उस ने कभी अपनी बीबी के साथ सोहबत न की हो या जिस के साथ की हो उस के साथ निकाह फ़ासिद हुवा हो तो येह सब गैर मुहसन में दाखिल हैं और इन सब का हुक्म कोड़े मारना है। **मसाइल** : मर्द को कोड़े लगाने के वक्त खड़ा किया जाए और उस के तमाम कपड़े उतार दिये जाएं सिवा तहबन्द के और उस के तमाम बदन पर कोड़े लगाए जाएं सिवाए सर चेहे और शर्मगाह के, कोड़े इस तरह लगाए जाएं कि अलम (दर्द) गोशत तक न पहुंचे और कोड़ा मुतवस्सित् दरजे का हो और औरत को कोड़े लगाने के वक्त खड़ा न किया जाए न उस के कपड़े उतारे जाएं अलबत्ता अगर पोस्तीन (चमड़े का जुब्बा) या रूपंदार कपड़े पहने हुए हो तो उतार दिये जाएं। येह हुक्म हुर और हुरा का है या'नी आज़ाद मर्द और औरत का। और बांदी गुलाम की हद इस से निस्फ़ या'नी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरए निसाअ में मज्कूर हो चुका। सुबूते जिना या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या जिना करने वाले के चार मरतबा इक्कार कर लेने से। फिर भी इमाम बार बार सुवाल करेगा और दरयाफ़्त करेगा कि जिना से क्या मुराद है ? कहां किया, किस से किया, कब किया, अगर इन सब को बयान कर दिया तो जिना साबित होगा वरना नहीं। और गवाहों को सराहतन अपना मुआयना बयान करना होगा बिगैर इस के सुबूत न होगा। लिवातत जिना में दाखिल नहीं लिहाजा इस फे'ल से हद वाजिब नहीं होती, लेकिन ता'ज़ीर वाजिब होती है और इस ता'ज़ीर में सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के चन्द क़ौल मरवी हैं : आग में जला देना, गर्क कर देना, बुलन्दी से गिराना और ऊपर से पथर बरसाना, फ़ाइल व मफ़़ुल दोनों का एक ही हुक्म है। 4 : या'नी हुदूद के पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत और मुतसल्लिब (सख़्की से कारबन्द) रहो। 5 : ताकि इब्रत हासिल हो।

اَوْ مُشْرِكٍ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلٰی الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۳ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

या मुश्रिक⁶ और येह काम⁷ ईमान वालों पर हराम है⁸ और जो पारसा औरतों को

الْبُحْصَنَاتِ شَمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً

ऐब लगाएं फिर चार गवाह मुआयना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ

وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝۴ اِلَّا الَّذِيْنَ

और उन की कोई गवाही कभी न मानो⁹ और वोही फ़ासिक हैं मगर जो

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵ وَالَّذِيْنَ

इस के बा'द तौबा कर लें और संवर जाएं¹⁰ तो बेशक अल्लाह बख़्ताने वाला मेहरबान है और वोह जो

يَرْمُوْنَ اَرْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ اِلَّا اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ

अपनी औरतों को ऐब लगाएं¹¹ और उन के पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की

6 : क्यूं कि खबीस का मैलान खबीस ही की तरफ होता है नेकों को खबीसों की तरफ रबत नहीं होती। शाने नुजूल : मुहाजिरीन में बा'जे बिल्कुल नादार थे न उन के पास कुछ माल था न उन का कोई अज़ीज़ करीब था और बदकार मुश्रिका औरतें दौलत मन्द और मालदार थीं येह देख कर किसी मुहाजिर को खयाल आया कि अगर उन से निकाह कर लिया जाए तो उन की दौलत काम में आएगी। सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से उन्होंने ने इस की इजाज़त चाही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस से रोक दिया गया। 7 : या'नी बदकारों से निकाह करना 8 : इब्तिदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह करना हराम था बा'द में आयत مِنْكُمْ وَالنَّكَحُ الْأَيَامَى مِنْكُمْ से मन्सूख हो गया।

9 : इस आयत से चन्द मसाइल साबित हुए। मस्अला 1 : जो शख्स किसी पारसा मर्दा या औरत को जिना की तोहमत लगाए और इस पर चार मुआयना के गवाह पेश न कर सके तो उस पर हद वाजिब हो जाती है अस्सी कोड़े। आयत में "मुहसनात" लफज़ खुसूसे वाक़िआ के सबब से वारिद हुवा या इस लिये कि औरतों को तोहमत लगाना कसीरुल वुकूअ है। मस्अला 2 : और ऐसे लोग जो जिना की तोहमत में सज़ायब हों और उन पर हद जारी हो चुकी हो मर्दुशहादह हो जाते हैं, कभी उन की गवाही मकबूल नहीं होती। पारसा से मुराद वोह हैं जो मुसल्मान मुकल्लफ़, आज़ाद और जिना से पाक हों। मस्अला 3 : जिना की शहादत का निसाब चार गवाह हैं। मस्अला 4 : हदे कज़फ़ मुतालबे पर मशरूत है, जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह मुतालबा न करे तो क़ाज़ी पर हद क़ाइम करना लाज़िम नहीं। मस्अला 5 :

मुतालबे का हक़ उसी को है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह जिन्दा हो, और अगर मर गया हो तो उस के बेटे पोते को भी है। मस्अला 6 : गुलाम अपने मौला पर और बेटा बाप पर कज़फ़ या'नी अपनी मां पर जिना की तोहमत लगाने का दा'वा नहीं कर सकता। मस्अला 7 :

कज़फ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं कि वोह सराहतन किसी को या ज़ानी कहे या येह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उस के बाप का नाम ले कर कहे कि तू फुलां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे और हो उस की मां पारसा तो ऐसा शख्स क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत की हद आएगी। मस्अला 8 :

अगर गैर मुहसन को जिना की तोहमत लगाई मसलन किसी गुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख्स को जिस का कभी जिना करना साबित हो तो उस पर हदे कज़फ़ क़ाइम न होगी, बल्कि उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी और येह ता'ज़ीर तीन से उन्तालीस तक हस्बे तच्चीजे हाकिमे शरअ कोड़े लगाना है। इसी तरह अगर किसी शख्स ने जिना के सिवा और किसी फुज़ूर की तोहमत लगाई और पारसा मुसल्मान को ऐ फ़ासिक, ऐ काफ़िर, ऐ खबीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुखन्नस, ऐ बद दियानत, ऐ लूती, ऐ जिन्दीक, ऐ दय्यूस, ऐ शराबी, ऐ सूद ख़्वार, ऐ बदकार औरत के बच्चे, ऐ हराम ज़ादे, इस किस्म के अल्फ़ाज़ कहे तो भी उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी। मस्अला 9 :

इमाम या'नी हाकिमे शरअ को और उस शख्स को जिसे तोहमत लगाई गई हो सुबूत से कबूल मुआफ़ करने का हक़ है। मस्अला 10 :

अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि गुलाम हो तो उस को चालीस कोड़े लगाए जाएंगे। मस्अला 11 : तोहमत लगाने के जुर्म में जिस को हद लगाई गई हो उस की गवाही किसी मुआमले में मो'तबर नहीं, चाहे वोह तौबा करे। लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबा करने और आदिल होने की सूरत में उस का कौल कबूल कर लिया जाएगा क्यूं कि येह दर हकीकत शहादत नहीं है इसी लिये इस में लफ़्जे शहादत और निसाबे शहादत भी शर्त नहीं। 10 : अपने अहवाल व अफ़आल को दुरुस्त कर लें 11 : जिना का।

أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۖ وَالْخَامِسَةَ

गवाही यह है कि चार बार गवाही दे **अल्लाह** के नाम से कि वोह सच्चा है¹² और पांचवीं

أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۗ وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ

यह कि **अल्लाह** की ला'नत हो उस पर अगर झूठा हो और औरत से यूं सज़ा टल जाएगी

أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۗ وَالْخَامِسَةَ

कि वोह **अल्लाह** का नाम ले कर चार बार गवाही दे कि मर्द झूठा है¹³ और पांचवीं

أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۙ وَلَوْ لَا فَضَّلَ اللَّهُ

यूं कि औरत पर ग़ुज़ब **अल्लाह** का अगर मर्द सच्चा हो¹⁴ और अगर **अल्लाह** का फ़ज़ल

عَلَيْكُمْ وَرَاحَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۙ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا

और उस की रहमत तुम पर न होती और यह कि **अल्लाह** तौबा क़बूल फ़रमाता हिकमत वाला है तो तुम्हारा पर्दा खोल देता बेशक वोह कि यह बड़ा

بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۗ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم ۗ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ ط

बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअत है¹⁵ उसे अपने लिये बुरा न समझो बल्कि वोह तुम्हारे लिये बेहतर है¹⁶

12 : औरत पर जिना का इल्ज़ाम लगाने में । 13 : उस पर जिना की तोहमत लगाने में । 14 : इस को "लिआन" कहते हैं । मस्अला : जब मर्द अपनी बीबी पर जिना की तोहमत लगाए तो अगर मर्द व औरत दोनों शहादत के अहल हों और औरत इस पर मुतालबा करे तो मर्द पर लिआन वाजिब हो जाता है । अगर वोह लिआन से इन्कार करे तो उस को उस वक़्त तक कैद रखा जाएगा जब तक वोह लिआन करे या अपने झूट का मुक़िर हो । अगर झूट का इक्कार करे तो उस को हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी जिस का बयान ऊपर गुज़र चुका है । और अगर लिआन करना चाहे तो उस को चार मरतबा **अल्लाह** की क़सम के साथ कहना होगा कि वोह इस औरत पर जिना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है और पांचवीं मरतबा यह कहना होगा कि **अल्लाह** की ला'नत मुज़ पर अगर मैं यह इल्ज़ाम लगाने में झूटा होऊँ । इतना करने के बा'द मर्द पर से हद्दे क़ज़फ़ साक़ित हो जाएगी और औरत पर लिआन वाजिब होगा, इन्कार करेगी तो कैद की जाएगी यहाँ तक कि लिआन मन्ज़ूर करे या शोहर के इल्ज़ाम लगाने की तस्दीक करे । अगर तस्दीक की तो औरत पर जिना की हद्द लगाई जाएगी और अगर लिआन करना चाहे तो इस को चार मरतबा **अल्लाह** की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द इस पर जिना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं मरतबा यह कहना होगा कि अगर मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुज़ पर खुदा का ग़ुज़ब हो । इतना कहने के बा'द औरत से जिना की हद्द साक़ित हो जाएगी और लिआन के बा'द काज़ी के तफ़रीक़ करने से फ़रक़त वाक़ेअ होगी बिग़ैर इस के नहीं । और यह तफ़रीक़ तलाक़े बाइन होगी । और अगर मर्द अहले शहादत में से न हो मसलन गुलाम हो या काफ़िर हो या उस पर क़ज़फ़ की हद्द लग चुकी हो तो लिआन न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर हद्दे क़ज़फ़ लगाई जाएगी । और अगर मर्द अहले शहादत में से हो और औरत में यह अहलिय्यत न हो इस तरह कि वोह बांदी हो या काफ़िरा हो या उस पर क़ज़फ़ की हद्द लग चुकी हो या बच्ची हो या मजनुना हो या जानिया हो इस सूरत में न मर्द पर हद्द होगी और न लिआन ।

शाने नुज़ूल : यह आयत एक सहाबी के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने ने सय्यिदे आलम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ وَسَلَّمَ** से दरयाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औरत को जिना में मुब्तला देखे तो क्या करे न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फुरसत है और न बिग़ैर गवाही के वोह यह बात कह सकता है ब्यूं कि इसे हद्दे क़ज़फ़ का अन्देशा है । इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और लिआन का हुक्म दिया गया । 15 : बड़े बोहतान से मुराद हज़रते उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** पर तोहमत लगाना है । 5 सिने हिजरी ग़ुज़ब बनी अल मुस्तलिक़ से वापसी के वक़्त काफ़िरा करीबे मदीना एक पडाव पर ठहरा तो उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गई, वहाँ हार आप का टूट गया, उस की तलाश में मसरूफ़ हो गई । इधर काफ़िरने ने कूच किया और आप का महमल (कजावा) शरीफ़ ऊंट पर कस दिया और उन्हें येही खयाल रहा कि उम्मुल मुअमिनीन इस में हैं । काफ़िरा चल दिया आप आ कर काफ़िले की जगह बैठ

لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ

उन में हर शख्स के लिये वोह गुनाह है जो उस ने कमाया¹⁷ और उन में वोह जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया¹⁸

لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ لَوْلَا إِذْ سَعَيْتُمْ لَكُمُ الْمَوْتُ وَتُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ

उस के लिये बड़ा अज़ाब है¹⁹ क्यूं न हुवा जब तुम ने उसे सुना था कि मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों ने

بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۝ وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ

अपनों पर नेक गुमान किया होता²⁰ और कहते येह खुला बोहतान है²¹ इस पर चार गवाह

بِأَرْبَعَةٍ شُهَدَاءَ ۝ فَاذْلَمُوا بِالشَّهَادَةِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ

क्यूं न लाए तो जब गवाह न लाए तो वोही **अल्लाह** के नज़्दीक

गई और आप ने खयाल किया कि मेरी तलाश में काफ़िला ज़रूर वापस होगा। काफ़िले के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिये एक साहिब रहा करते थे, उस मौक़अ पर हज़रते सफ़्वान इस काम पर थे। जब वोह आए और उन्होंने ने आप को देखा तो बुलन्द आवाज़ से "إِنَّ اللَّهَ وَأَنَا لَبِيهِ رَجُعُونَ" पुकारा। आप ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्होंने ने अपनी कंटनी बिठाई आप उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंचीं। मुनाफ़िकीने सियाह बातिन ने अवहामे फ़ासिदा फैलाए और आप की शान में बदगोई शुरू की। बा'जू मुसल्मान भी उन के फ़रेब में आ गए और उन की ज़बान से भी कोई कलिमाए बेजा सरज़द हुवा। उम्मुल मुअमिनीन बीमार हो गई और एक माह तक बीमार रहीं, उस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ न हुई कि उन की निस्वत मुनाफ़िकीन क्या बक रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मिस्तह से उन्हें येह खबर मा'लूम हुई और इस से आप का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस तरह रोई कि आप का आंसू न थमता था और न एक लम्हे के लिये नींद आती थी। इस हाल में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर वह्य नाज़िल हुई और हज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त्हा़रत में येह आयतें उतरिं और आप का शरफ़ो मर्तबा **अल्लाह** तआला ने इतना बढ़ाया कि कुरआन की बहुत सी आयत में आप की त्हा़रत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई। इस दौरान में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था : मुझे अपने अहल की पाकी व ख़ूबी बिल यकीन मा'लूम है तो जिस शख्स ने इन के हक़ में बदगोई की है उस की तरफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़िरत पेश कर सकता है ? हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि मुनाफ़िकीन बिल यकीन झूटे हैं उम्मुल मुअमिनीन बिल यकीन पाक हैं **अल्लाह** तआला ने सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के जिस्मे पाक को मख़बी के बैठने से महफूज़ रखा कि वोह नजासतों पर बैठती है, कैसे हो सकता है कि वोह आप को बद औरत की सोहबत से महफूज़ न रखे ! हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने भी इस तरह आप की त्हा़रत बयान की और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने आप का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि इस साए पर किसी का क़दम न पड़े तो जो परवर्दगार आप के साए को महफूज़ रखता है किस तरह मुम्किन है कि वोह आप के अहल को महफूज़ न फ़रमाए। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि एक जू का खून लगने से परवर्दगारे आलम ने आप को ना'लेन उतार देने का हुक्म दिया, जो परवर्दगार आप की ना'ल शरीफ़ की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फ़रमाए मुम्किन नहीं कि वोह आप के अहल की आलूदगी गवारा करे। इस तरह बहुत से सहाबा और बहुत सी सहाबिय्यात ने क़समें खाई, आयत नाज़िल होने से क़ब्ल ही हज़रते उम्मुल मुअमिनीन की तरफ़ से कुलूब मुत्मइन थे, आयत के नुज़ूल ने उन का इज़्ज़ो शरफ़ और ज़ियादा कर दिया। तो बदगोयों की बदगोई **अल्लाह** और उस के रसूल और सहाबए किबार के नज़्दीक बातिल है और बदगोई करने वालों के लिये सख्त तरीन मुसीबत है। **16 : कि अल्लाह** तबारक व तआला तुम्हें इस पर जज़ा देगा और हज़रते उम्मुल मुअमिनीन की शान और उन की बराअत ज़ाहिर फ़रमाएगा। चुनान्चे इस बराअत में उस ने अत्तरह आयतें नाज़िल फ़रमाई। **17 : या'नी** ब क़दर उस के अमल के कि किसी ने तूफ़ान उठाया किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़बानी मुवाफ़क़त की कोई हंस दिया किसी ने खामोशी के साथ सुन ही लिया जिस ने जो किया उस का बदला पाएगा। **18 : कि** अपने दिल से येह तूफ़ान घड़ा और इस को मशहूर करता फिरा और वोह अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक है। **19 :** आखिरत में। मरवी है कि उन बोहतान लगाने वालों पर ब हुक्मे रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हद काइम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए। **20 :** क्यूं कि मुसल्मान को येही हुक्म है कि मुसल्मान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी मन्मूअ है। बा'जू गुमराह बेबाक येह कह गुज़रते हैं कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को **مَعَادُ اللَّهِ** इस मुआमले में बद गुमानी हो गई थी। वोह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मोमिनीन के हक़ में भी लाइक़ नहीं है। **अल्लाह** तआला मोमिनीन से फ़रमाता है कि तुम ने नेक गुमान क्यूं न किया, तो कैसे मुम्किन था कि रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** बद गुमानी करते। और हुज़ूर की निस्वत बद गुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बातिनी है खास कर ऐसी हालत में जब कि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर ने ब क़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि मेरे अहल पाक हैं जैसा कि ऊपर मज़कूर हो चुका। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान पर बद

الْكٰذِبُونَ ﴿١٣﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

झूटे हैं और अगर **अल्लाह** का फ़ज़ल और उस की रहमत तुम पर दुनिया और आख़िरत में न होती²²

لَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسِّنْتِكُمْ

तो जिस चरचे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अज़ाब पहुंचता जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुन कर लाते थे

وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسِبُونَهُ هينًا وَهُوَ

और अपने मुंह से वोह निकालते थे जिस का तुम्हें इल्म नहीं और उसे सहल समझते थे²³ और वोह

عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَا اِذْ سَعَيْتُمْ لَكُم مَّا يَكُونُ لَنَا اَنْ نَّتَكَلَّمَ

अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है²⁴ और क्यूं न हुवा जब तुम ने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात

بِهَذَا سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللَّهُ اَنْ تَعُودُوا

कहें²⁵ इलाही पाकी है तुझे²⁶ यह बड़ा बोहतान है **अल्लाह** तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी

لِثَلَاثَةِ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ وَيَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْاٰيٰتِ وَاللَّهُ

ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो और **अल्लाह** तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और **अल्लाह**

عَلَيْكُمْ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفٰحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ

इल्मो हिकमत वाला है वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चरचा

اَمْثُوْلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

फेले उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है दुनिया²⁷ और आख़िरत में²⁸ और **अल्लाह** जानता है²⁹ और तुम

لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَاَنَّ اللَّهَ رَءُوْفٌ

नहीं जानते और अगर **अल्लाह** का फ़ज़ल और उस की रहमत तुम पर न होती और येह कि **अल्लाह** तुम पर निहायत मेहरबान

गुमानी करना ना जाइज़ है और जब किसी नेक शख्स पर तोहमत लगाई जाए तो बिगैर सुबूत मुसलमान को इस की मुवाफ़कत और

तस्दीक करना रवा नहीं । 21 : बिल्कुल झूट है बे हकीकत है । 22 : और तुम पर फ़ज़लो करम मन्ज़ूर न होता, जिस में से तौबा के लिये

मोहलत देना भी है और आख़िरत में अफ़वो मग़िफ़रत फ़रमाना भी । 23 : और खयाल करते थे कि इस में बड़ा गुनाह नहीं 24 : जुमें अज़ीम

है । 25 : येह हमारे लिये रवा नहीं क्यूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता । 26 : इस से कि तेरे नबी की हरम को फुज़ूर की आलूदगी पहुंचे ।

मस्अला : येह मुम्किन ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके अगर्चे उस का मुव्तलाए कुफ़्र होना मुम्किन है क्यूं कि अम्बिया कुफ़्र

की तरफ़ मब़रस होते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ कुफ़्र के नज़दीक भी काबिले नफ़त हो उस से वोह पाक हों और जाहिर है कि औरत की

बदकारी उन के नज़दीक काबिले नफ़त है । (क़िरोरुद) 27 : या'नी इस जहान में, और वोह हद काइम करना है चुनान्चे इब्ने उबय और हस्सान

और मिस्तह के हद लगाई गई । (मरक) 28 : दोजख़ । अगर बे तौबा मर जाएं । 29 : दिलों के राज और बातिन के अहवाल ।

النَّصِيحَةُ

رَّحِيمٌ ٢٠ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ وَمَنْ

मेहर वाला है तो तुम इस का मजा चखते³⁰ ऐ ईमान वालो शैतान के कदमों पर न चलो और जो

يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَوْ لَا فَضْلُ

शैतान के कदमों पर चले तो वोह तो बे हयाई और बुरी ही बात बताएगा³¹ और अगर **अल्लाह** का

اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۗ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَيِّتُ

फ़ज़ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता³² हां **अल्लाह** सुथरा कर देता है

مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَيُفَعِّلُ عَلَيْكُمْ ۚ وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ

जिसे चाहे³³ और **अल्लाह** सुनता जानता है और कसम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले³⁴ और

السَّعَةِ أَنْ يُوتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ

गुन्जाइश वाले हैं³⁵ कराबत वालों और मिसकीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को

اللَّهِ ۗ وَيَعْفُوا وَيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ

देने की और चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शाश करे और **अल्लाह**

عَفُورًا رَّحِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ

बख़्शने वाला मेहरबान है³⁶ बेशक वोह जो ऐब लगाते हैं अन्जान³⁷ पारसा ईमान वालियों को³⁸

لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ يَوْمَ تَشْهَدُ

उन पर ला'नत है दुन्या और आखिरत में और उन के लिये बड़ा अज़ाब है³⁹ जिस दिन⁴⁰ उन पर

30 : और अज़ाबे इलाही तुम्हें मोहलत न देता। 31 : उस के वस्वसों में न पड़ो और बोहतान उठाने वालों की बातों पर कान न लगाओ।

32 : और **अल्लाह** तआला उस को तौबा व हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ न देता और अप्पुको मरिफ़रत न फ़रमाता। 33 : तौबा क़बूल फ़रमा कर।

34 : और मन्ज़िलत वाले हैं दीन में। 35 : सरवत व माल में। शाने नुज़ूल : येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के हक़ में

नाज़िल हुई। आप ने कसम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वोह आप की ख़ाला के बेटे थे, नादार थे मुहाज़िर थे बद्दी थे।

आप ही उन का ख़र्च उठाते थे, मगर चूँकि उम्मुल मुअमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ उन्होंने ने मुवाफ़क़त की थी इस लिये आप ने

येह कसम खाई, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 36 : जब येह आयत सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने पढ़ी तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा : बेशक मेरी आरजू है कि **अल्लाह** मेरी मरिफ़रत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़ूफ़

न करूँगा। चुनान्वे आप ने उस को जारी फ़रमा दिया। मरसला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी काम पर कसम खाए फिर

मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और कसम का कफ़ारा दे। हदीसे सहीह में येही वारिद है।

मरसला : इस आयत से हज़रते सिद्दीके अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उलूए शानो मरतबत जाहिर होती है

कि **अल्लाह** तआला ने आप को उलूल फ़ज़ल फ़रमाया और 37 : औरतों को जो बदकारी और फुज़ूर को जानती भी नहीं और बुरा खयाल

उन के दिल में भी नहीं गुज़रता और 38 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि येह सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की

अज़ाजे मुतद्हरात के औसाफ़ हैं। एक क़ौल येह है कि इस से तमाम ईमानदार पारसा औरतें मुराद हैं, इन के ऐब लगाने वालों पर **अल्लाह**

عَلَيْهِمُ السِّنْتُهُمْ وَأَيُّدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ يَوْمَئِذٍ

गवाही देंगी उन की ज़बानें⁴¹ और उन के हाथ और उन के पांजों जो कुछ करते थे उस दिन

يُؤْفِكُهُمُ اللَّهُ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

अल्लाह उन्हें उन की सच्ची सज़ा पूरी देगा⁴² और जान लेंगे कि अल्लाह ही सरीह हक़ है⁴³

الْخَيْثُ لِالْخَيْثَيْنِ وَالْخَيْثُونَ لِالْخَيْثِ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبِينَ وَ

गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये⁴⁴ और सुथरियां सुथरों के लिये और

الطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ

सुथरे सुथरियों के लिये वोह⁴⁵ पाक हैं उन बातों से जो येह⁴⁶ कह रहे हैं उन के लिये बख़्शिश

وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ

और इज्जत की रोज़ी है⁴⁷ ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ

حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ

जब तक इजाज़त न ले लो⁴⁸ और उन के साकिनों पर सलाम न कर लो⁴⁹ येह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम

तआला ला'नत फ़रमाता है। 39 : येह अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के हक़ में है। 40 (عَارُونَ) : या'नी रोज़े क़ियामत 41 :

ज़बानों का गवाही देना तो उन के मूंहों पर मोहरें लगाए जाने से कबल होगा और इस के बा'द मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी जिस से ज़बानें

बन्द हो जाएंगी और आ'ज़ा बोलने लगेंगे और दुन्या में जो अमल किये थे उन की ख़बर देंगे जैसे कि आगे इर्शाद है। 42 : जिस के वोह

मुस्तहक़ हैं। 43 : या'नी मौजूद ज़ाहिर है, उसी की कुदरत से हर चीज़ का वुजूद है। बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि

कुफ़्फ़ार दुन्या में अल्लाह तआला के वा'दों में शक़ करते थे अल्लाह तआला आख़िरत में उन्हें उन के आ'माल की जज़ा दे कर उन वा'दों

का हक़ होना ज़ाहिर फ़रमा देगा। फ़ाएदा : कुरआने करीम में किसी गुनाह पर ऐसी तग़लीज़ व तशदीद और तक्रार व ताकीद नहीं फ़रमाई गई

जैसी कि हज़रते आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई। इस से सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की रिफ़अते

मन्ज़िलत ज़ाहिर होती है। 44 : या'नी ख़बीस के लिये ख़बीस लाइक़ है, ख़बीसा औरत ख़बीस मर्द के लिये और ख़बीस मर्द ख़बीसा औरत

के लिये और ख़बीस आदमी ख़बीस बातों के दरपै होते हैं और ख़बीस बातें ख़बीस आदमी का वतीरा होती हैं। 45 : या'नी पाक मर्द और

औरतें जिन में से हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا और सफ़वान हैं। 46 : तोहमत लगाने वाले ख़बीस 47 : या'नी सुथरों और सुथरियों

के लिये जन्नत में। इस आयत से हज़रते आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का कमाले फ़ज़्रो शरफ़ साबित हुवा कि वोह तय्यिबा और पाक पैदा की गई

और कुरआने करीम में उन की पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मरिफ़त और रिज़्के करीम का वा'दा दिया गया। हज़रते उम्मूल

मुअमिनीन आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को अल्लाह ने बहुत ख़साइस अता फ़रमाए जो आप के लिये क़ाबिले फ़ख़्र हैं, उन में से बा'ज़

येह हैं कि जिब्रीले अमीन सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हज़ूर में एक हरीर (रेशमी कपड़े) पर आप की तस्वीर लाए और अज़्र किया

कि येह आप की जौजा हैं और येह कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने आप के सिवा किसी कुंवारी से निकाह न फ़रमाया और येह कि रसूले

करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात आप की गोद में और आप की नौबत के दिन हुई और आप ही का हुज्र पर वह्य नाज़िल हुई कि हज़रते

सिद्दीका आप के साथ आप के लिहाफ़ में होतीं और येह कि आप हज़रते सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़लीफ़े रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का आराम गाह और आप का रौज़ए ताहिरा हुवा और येह कि बा'ज़ अवक़ात ऐसी हालत में हज़ूर पर वह्य नाज़िल हुई कि हज़रते

सिद्दीका आप के साथ आप के लिहाफ़ में होतीं और येह कि आप हज़रते सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़लीफ़े रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की दुख़तर हैं और येह कि आप पाक पैदा की गई और आप से मरिफ़त व रिज़्के करीम का वा'दा फ़रमाया गया। 48 मरसला : इस आयत

से साबित हुवा कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का तरीका येह भी है कि बुलन्द आवाज़ से "سُبْحَانَ اللهِ" या

تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا آحَادًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ

ध्यान करो फिर अगर उन में किसी को न पाओ⁵⁰ जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उन में न

لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ارجِعُوا فارجعوا هُوَ اَرْكِي لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا

जाओ⁵¹ और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो⁵² यह तुम्हारे लिये बहुत सुथरा है **اللَّهُ** तुम्हारे

تَعْمَلُونَ عَلَيْهِ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

कामों को जानता है इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो खास किसी की सुकूनत

مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَبَدُّونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

के नहीं⁵³ और उन के बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और **اللَّهُ** जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْضُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا أَرْجُلَهُمْ ۗ ذٰلِكَ اَرْكِي

मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें⁵⁴ और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें⁵⁵ यह उन के लिये बहुत

لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَعْضْنَ مِنْ

सुथरा है बेशक **اللَّهُ** को उन के कामों की ख़बर है और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ

“الْحَمْدُ لِلَّهِ” या “اللَّهُ أَكْبَرُ” कहे या खन्कारे जिस से मकान वालों को मा'लूम हो कि कोई आना चाहता है या यह कहे कि क्या मुझे अन्दर

आने की इजाज़त है। ग़ैर के घर से वोह घर मुराद है जिस में ग़ैर सुकूनत रखता हो ख़्वाह उस का मालिक हो या न हो। 49 **मस्अला** : ग़ैर

के घर जाने वाले की अगर साहिबे मकान से पहले ही मुलाकात हो जाए तो अव्वल सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वोह मकान

के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त चाहे इस तरह कि कहे : “اَسْلَامًا عَلَيْكُمْ” क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ? हदीस शरीफ़ में है

कि सलाम को कलाम पर मुकद्दम करो। हज़रते अब्दुल्लाह की क़िराअत भी इसी पर दलालत करती है। उन की क़िराअत यूँ है :

मस्अला : अगर (مدارك، كشاف، اجماع) और ये भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे। “حَتَّىٰ تَسَلِّمُوا عَلٰى اَهْلِهَا وَتَسْتَأْذِنُوْا”

दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दाईं या बाईं जानिब खड़े हो कर इजाज़त त़लब करे। **मस्अला** : हदीस शरीफ़ में

है अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त त़लब करे। (موطا امام مالك) 50 : या'नी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो 51 : क्यूं कि मिल्के

ग़ैर में तसरहफ़ करने के लिये उस की रिज़ा ज़रूरी है। 52 : और इजाज़त त़लब करने में इसरार व इल्हाह (तक्कर) न करो। **मस्अला** : किसी

का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और शदीद आवाज़ से चीखना खास कर उलमा और बुजुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना उन को ज़ोर से

पुकारना मक्रूह व ख़िलाफ़ अदब है। 53 : मिस्ल सराए और मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरा के कि इस में जाने के लिये इजाज़त हासिल करने की हाज़त

नहीं। **शाने नुज़ूल** : येह आयत उन अस्ह़ाब के ज़वाब में नाज़िल हुई जिन्होंने आयते इस्तीज़ान या'नी ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बा'द

दरयाफ़्त किया था कि मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तय्यिबा के दरमियान और शाम की राह में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उन में

दाख़िल होने के लिये भी इजाज़त लेना ज़रूरी है। 54 : और जिस चीज़ का देखना जाइज़ नहीं उस पर नज़र न डालें। **मसाइल** : मर्द का

बदन ज़ेरे नाफ़ से घुटने के नीचे तक औरत (छुपाने की जगह) है इस का देखना जाइज़ नहीं और औरतों में से अपने महारिम और ग़ैर की बांदी का

भी येही हुक्म है मगर इतना और है कि उन के पेट और पीठ का देखना भी जाइज़ नहीं और हुरा अज्जबिय्या के तमाम बदन का देखना मन्तूअ है

إِنْ لَّمْ يَأْمَنْ مِنَ الشَّهْوَةِ، وَإِنْ آمَنَ مِنْهَا فَالْمَنْعُ النَّظْرُ إِلَىٰ مَا سِوَىٰ الْوَجْهِ وَالْكَفِّ وَالْقَدَمِ، وَمَنْ يَأْمَنْ فَإِنَّ الزَّمَانَ زَمَانُ الْفَسَادِ فَلَا يَحِلُّ النَّظْرُ إِلَىٰ الْحُرَةِ الْأَجْنَبِيَّةِ

“مُطْلَقًا مِنْ غَيْرِ ضَرُورَةٍ” मगर ब हालते ज़रूरत काज़ी व गवाह को और उस औरत से निकाह की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जाइज़

है और अगर किसी औरत के ज़रीए से हाल मा'लूम कर सकता हो तो न देखे और तबीब को मौज़ए मरज़ का ब कदरे ज़रूरत देखना जाइज़

है। **मस्अला** : अमर्द लड़के की तर्फ़ भी शहवत से देखना हराम है। (مدارك و اجماع) 55 : और ज़िना व हराम से बचें या येह मा'ना है कि अपनी

शर्मगाहों और उन के लवाहिक या'नी तमाम बदन औरत को छुपाएं और पर्दे का एहतियार रखें।

أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ

नीची रखें⁵⁶ और अपनी पारसाई की हिफाजत करें और अपना बनाव न दिखाएं⁵⁷ मगर जितना खुद ही ज़ाहिर

مِنْهَا وَلِيَضْرِبْنَ بِخُرْجِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا

है और दूधड़े अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर

لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ

अपने शोहरों पर या अपने बाप⁵⁸ या शोहरों के बाप⁵⁹ या अपने बेटे⁶⁰ या शोहरों

بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ

के बेटे⁶¹ या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भान्जे⁶² या अपने दीन की औरतें

أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ

या अपनी कनीजें जो अपने हाथ की मिल्क हो⁶³ या नोकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हो⁶⁴

أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يُضْرَبْنَ

या वोह बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीजों की खबर नहीं⁶⁵ और ज़मीन पर

بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ ۖ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۖ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا

पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुआ सिंगार⁶⁶ और **اللَّهُ** की तरफ़ तौबा करो

56 : और गैर मर्दों को न देखें। हदीस शरीफ़ में है कि अज़्वाजे मुत्हहरात में से बा'ज उम्महातुल मुअमिनीन सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में थीं, उसी वक़्त इन्हे उम्मे मक्तूम आए, हज़ूर ने अज़्वाज को पर्दे का हुक्म फ़रमाया। उन्होंने अर्ज़ किया कि वोह तो नाबीना हैं। फ़रमाया : तुम तो नाबीना नहीं हो। (ترمذی و ابوداؤد) इस हदीस से मा'लूम हुआ कि औरतों को भी ना महरम का देखना और उस के सामने होना जाइज़ नहीं। 57 : अज़हर (ज़ियादा ज़ाहिर बात) येह है कि येह हुक्म नमाज़ का है, न नज़र का, क्यूं कि हुरा का तमाम बदन औरत है, शोहर और महरम के सिवा और किसी के लिये इस के किसी हिस्से का देखना बे ज़रूरत जाइज़ नहीं और मुआलजा वगैरा की ज़रूरत से कदरे ज़रूरत जाइज़ है। (تفسیر احمدی) 58 : और इन्हीं के हुक्म में दादा परदादा वगैरा तमाम उसूल। 59 : कि वोह भी महरम हो जाते हैं। 60 : और इन्हीं के हुक्म में है इन की औलाद। 61 : कि वोह भी महरम हो गए। 62 : और इन्हीं के हुक्म में हैं चचा मामूं वगैरा तमाम महारिम। हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अबू उबैदा बिन जराह को लिखा था कि कुफ़फ़ार अहले किताब की औरतों को मुसल्मान औरतों के साथ हम्माम में दाखिल होने से मन्ज़ करें। इस से मा'लूम हुआ कि मुस्लिमा औरत को काफ़िरा औरत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं। **मस्अला** : औरत अपने गुलाम से भी मिस्ल अज्जबी के पर्दा करे। (مدارك وغیره) 63 : इन पर अपना सिंगार ज़ाहिर करना मम्नूअ नहीं और गुलाम इन के हुक्म में नहीं, इस को अपनी मालिका के मवाजेए जीनत को देखना जाइज़ नहीं। 64 : मसलन ऐसे बूढ़े हों जिन्हें अस्लन शहवत बाक़ी नहीं रही हो और हों सालेह। **मस्अला** : अइम्माए हनफ़िय्या के नज़दीक ख़री और इन्नीन हुरमते नज़र में अज्जबी का हुक्म रखते हैं। **मस्अला** : इसी तरह क़बीहुल अफ़आल मुखन्नस से भी पर्दा किया जाए जैसा कि हदीसे मुस्लिम से साबित है। 65 : वोह अभी नादान ना बालिग़ हैं। 66 : या'नी औरतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए। **मस्अला** : इसी लिये चाहिये कि औरतें बाजेदार झंझन न पहनें। हदीस शरीफ़ में है कि **اللَّهُ تَعَالَى** तआला उस कौम की दुआ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औरतें झंझन पहनती हों। इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अदमे क़बूले दुआ का सबब है तो ख़ास औरत की आवाज़ और उस की बे पर्दागी कैसी मूजबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की तरफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है (**اللَّهُ تَعَالَى** को पनाह)। (تفسیر احمدی وغیره)

أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنْكِحُوا الْآيَاتِي مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۖ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْزِمَهُمُ اللَّهُ

ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ और निकाह कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह हों⁶⁷ और

الصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۖ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْزِمَهُمُ اللَّهُ

अपने लाइक बन्दों और कनीजों का अगर वोह फ़कीर हों तो **اللَّهُ** उन्हें ग़नी कर देगा

مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلَيْسَتَعْفَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ

अपने फ़ज़ल के सबब⁶⁸ और **اللَّهُ** वुस्तत वाला इल्म वाला है चाहिये कि बचे रहें⁶⁹ वोह जो निकाह का मक्दूर

نِكَاحًا حَتَّى يُعْزِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا

नहीं रखते⁷⁰ यहां तक कि **اللَّهُ** उन्हें मक्दूर वाला कर दे अपने फ़ज़ल से⁷¹ और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी गुलामों में से

مَلَكَتْ أَيْمَانَكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۗ وَأَتَوْهُمْ مِّنْ

जो येह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो⁷² अगर उन में कुछ भलाई जानो⁷³ और इस पर उन की मदद करो

مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۗ وَلَا تَكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَادْنَ

اللَّهُ के माल से जो तुम को दिया⁷⁴ और मजबूर न करो अपनी कनीजों को बदकारी पर जब कि वोह

تَحْصُنَّ الْبَتُّغُوا عَرْضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَمَنْ يُكْرِهْنَهَا فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ

बचना चाहें ताकि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो⁷⁵ और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक **اللَّهُ**

67 : ख़्वाह मर्द या औरत, कुंवारे या ग़ैर कुंवारे । 68 : इस ग़ना से मुराद या क़नाअत है कि वोह बेहतरीन ग़ना है जो क़ानेअ (क़नाअत करने वाले) को तरहुद से बे नियाज़ कर देता है । या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिये काफ़ी हो जाए जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुवा है या जौज व जौजा के दो रिज़्कों का जम्अ हो जाना या फ़राख़ी व बरकते निकाह जैसा कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है । 69 : ह़राम कारी से 70 : जिन्हें महर व नफ़का मुयस्सर नहीं । 71 : और महर व नफ़का अदा करने के क़ाबिल हो जाएं । हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जो निकाह की कुदरत रखे वोह निकाह करे कि निकाह पारसाई व पाकबाजी का मुईन (मददगार) है और जिसे निकाह की कुदरत न हो वोह रोजे रखे कि येह शहवतों के तोड़ने वाले हैं । 72 : कि वोह इस क़दर माल अदा कर के आज़ाद हो जाएं, और इस तरह की आज़ादी को किताबत कहते हैं और आयत में इस का अम्र इस्तिहूबाब के लिये है और येह इस्तिहूबाब उस शर्त के साथ मशरूत है जो इस के बा'द ही आयत में मज़कूर है । शाने नुज़ूल : हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा के गुलाम सुबैह ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की, मौला ने इन्कार किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो हुवैतिब ने उस को सो दीनार पर मुकातब कर दिया और उन में से बीस उस को बख़्श दिये, बाक़ी उस ने अदा कर दिये । 73 : भलाई से मुराद अमानत व दियानत और कमाई पर कुदरत रखना है कि वोह ह़लाल रोज़ी से माल हासिल कर के आज़ाद हो सके और मौला को माल दे कर आज़ादी हासिल करने के लिये भीक न मांगता फ़िरे । इसी लिये हज़रते सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने गुलाम को मुकातब करने से इन्कार फ़रमा दिया जो सिवाए भीक के कोई ज़रीआ कस्ब का न रखता था । 74 : मुसलमानों को इशाद है कि वोह मुकातब गुलामों को ज़कात वग़ैरा दे कर मदद करें जिस से वोह बदले किताबत दे कर अपनी गरदन छुड़ा सकें और आज़ाद हो सकें । 75 : या'नी तमए माल में अन्धे हो कर कनीजों को बदकारी पर मजबूर न करें । शाने नुज़ूल : येह आयत अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक के हक़ में नाज़िल हुई जो माल हासिल करने के लिये अपनी कनीजों को बदकारी पर मजबूर करता था, उन कनीजों ने सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से इस की शिकायत की, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।

بَعْدَ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ

बा'द इस के कि वोह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है⁷⁶ और बेशक हम ने उतारीं तुम्हारी तरफ़ रोशन आयते⁷⁷

وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٣﴾ اللَّهُ

और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिये नसीहत **اللَّهُ**

نُورِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط مَثَلُ نُورِهِ كَمِثْقَةِ فِيهَا مِصْبَاحٌ ط

नूर है⁷⁸ आस्मानों और ज़मीन का उस के नूर की⁷⁹ मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उस में चराग़ है

الْبُصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ط الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن

वोह चराग़ एक फ़ानूस में है वोह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रोशन होता है

شَجَرَةٍ مُّبْرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ لَا يَكَادُ زَيْتُهَا يُضَيِّءُ

बरकत वाले पेड़ जैतून से⁸⁰ जो न पूरब (मशरिफ़) का न पश्चिम (मगरिब) का⁸¹ करीब है कि उस का तेल⁸² भड़क उठे

وَلَوْ لَمْ تَنْسَسْهُ نَارًا ط نُورًا عَلَى نُورٍ ط يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ط

अगर्चे उसे आग न छूए नूर पर नूर है⁸³ **اللَّهُ** अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है

76 : और वबाले गुनाह मजबूर करने वाले पर । 77 : जिन्हों ने हलाल व हराम, हुदूद व अहकाम सब को वाजेह कर दिया । 78 : “नूर” **اللَّهُ** तआला के नामों में से एक नाम है । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि **اللَّهُ** आस्मान व ज़मीन का हादी है तो अहले समावात व अर्ज उस के नूर से हक़ की राह पाते हैं और उस की हिदायत से गुमराही की हैरत से नजात हासिल करते हैं । बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि **اللَّهُ** तआला आस्मान व ज़मीन का मुनव्वर फ़रमाने वाला है उस ने आस्मानों को मलाएका से और ज़मीन को अम्बिया से मुनव्वर किया । 79 : **اللَّهُ** के नूर से या तो कल्बे मोमिन की वोह नूरानियत मुराद है जिस से वोह हिदायत पाता और राहायब होता है । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि **اللَّهُ** के उस नूर की मिसाल जो उस ने मोमिन को अता फ़रमाया । बा'ज मुफ़स्सरीन ने उस नूर से कुरआन मुराद लिया और एक तफ़सीर येह है कि उस नूर से मुराद सय्यिदे काएनात अफ़ज़ले मौजूदात हज़रत रहमते आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हैं । 80 : येह दरख़्त निहायत कसीरुल बरकत है क्यूं कि इस का रोग़न जिस को “जैत” कहते हैं निहायत साफ़ व पाकीज़ा रोशनी देता है, सर में भी लगाया जाता है, सालन और नान खोरिश (गोश्त, मछली वगैरा) की जगह रोटी से भी खाया जाता है । दुन्या के और किसी तेल में येह वस्फ़ नहीं और दरख़्ते जैतून के पत्ते नहीं गिरते । 81 : **بَلِّغْ** वस्तु का है कि न उसे गरमी से ज़र पहुँचे न सरदी से । और वोह निहायत अज्वदो आ'ला है और उस के फ़ल ग़ायत ए'तदाल में । 82 : अपनी सफ़ा व लताफ़त के बाइस खुद 83 : इस तम्सील के मा'ना में अहले इल्म के कई कौल हैं एक येह कि नूर से मुराद हिदायत है और मा'ना येह हैं कि **اللَّهُ** तआला की हिदायत ग़ायते जुहूर में है कि आलमे महसूसत में इस की तश्बीह ऐसे रोशन दान से हो सकती है जिस में साफ़ शफ़फ़ाफ़ फ़ानूस हो उस फ़ानूस में ऐसा चराग़ हो जो निहायत ही बेहतर और मुसफ़फ़ा जैतून से रोशन हो कि इस की रोशनी निहायत आ'ला और साफ़ हो । और एक कौल येह है कि येह तम्सील नूरे सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की है । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने का'ब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के मा'ना बयान करो, उन्हों ने फ़रमाया कि **اللَّهُ** तआला ने अपने नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की मिसाल बयान फ़रमाई रोशन दान (ताक़) तो हुज़ूर का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस कल्बे मुबारक और चराग़ नुबुव्वत कि शजरे नुबुव्वत से रोशन है और उस नूरे मुहम्मदी की रोशनी व इज़ाअत इस मर्तबए कमाले जुहूर पर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमाएँ जब भी खल्क पर जाहिर हो जाए । और हज़रते इब्ने उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि रोशन दान तो सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का सीना मुबारक है और फ़ानूस कल्बे अत्हर और चराग़ वोह नूर जो **اللَّهُ** तआला ने उस में रखा कि शर्की है न

وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾ فِي بُيُوتِ

और अल्लाह मिसालें बयान फरमाता है लोगों के लिये और अल्लाह सब कुछ जानता है उन घरों में

أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ ۙ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ

जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है⁸⁴ और उन में उस का नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह करते हैं उन में सुबह

وَالْأَصَالِ ﴿٣٦﴾ رِجَالٌ ۙ لَا تُلْهِهِمُ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

और शाम⁸⁵ वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न खरीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद⁸⁶

وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ

और नमाज़ बरपा रखने⁸⁷ और ज़कात देने से⁸⁸ डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे

الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَوَيَزِيدَهُمُ

दिल और आंखें⁸⁹ ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फज़ल से उन्हें

مِّنْ فَضْلِهِ ۖ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ

इन्आम ज़ियादा दे और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती और जो

كَفَرُوا ۖ أَعْبَاهُمُ كَسْرًا بِبِقِيَعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّنُّ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا

काफ़िर हुए उन के काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेत किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब

गर्बी, न यहूदी न नसरानी, एक शजरए मुबारका से रोशन है वोह शजर हज़रते इब्राहीम علیه الصّلاة والسلام हैं, नूरे क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी

नूर पर नूर है। और मुहम्मद बिन का'ब कुरज़ी ने कहा कि रोशन दान व फ़ानूस तो हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السّلام हैं और चराग़ सय्यिदे आलम

وَأَمَّا شَجَرَةُ الْمُبَارَكِ فَهِيَ شَجَرَةُ الْإِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السّلام وَأَمَّا شَجَرَةُ الْيَسْرَةِ فَهِيَ شَجَرَةُ الْيَسْرَةِ عَلَيْهِ السّلام وَأَمَّا شَجَرَةُ الْيَسْرَةِ فَهِيَ شَجَرَةُ الْيَسْرَةِ عَلَيْهِ السّلام

और शर्की व गर्बी न होने के येह मा'ना हैं कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السّلام न यहूदी थे न नसरानी, क्यूं कि यहूद मगरिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और नसारा मशरिक् की

तरफ़। करीब है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के महासिन व कमालात नुजुले वह्य से क़बल ही ख़ल्क पर ज़ाहिर हो जाएं, नूर पर

नूर येह कि नबी हैं नस्ले नबी से नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर। इस के इलावा और भी बहुत अक्वाल हैं। (84 : غار) और उन की ता'जीम

व तहरीर लाज़िम की। मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में।

85 : तस्बीह से मुराद नमाज़ें हैं, सुबह की तस्बीह से फ़ज़्र और शाम से ज़ोहर व अस्र व मगरिब व इशा मुराद हैं। 86 : और उस के ज़िक्रे

क़ल्बी व लिसानी और अवक़ाते नमाज़ पर मस्जिदों की हाज़िरी से 87 : और उन्हें वक़्त पर अदा करने से। हज़रते इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

बाज़ार में थे, मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई, आप ने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द कर के मस्जिद में दाख़िल हो

गए। तो फ़रमाया कि आयत "رِجَالٌ لَّا تُلْهِهِمُ" ऐसे ही लोगों के हक़ में है। 88 : उस के वक़्त पर। 89 : दिलों का उलट जाना येह है कि

शिद्दते ख़ौफ़ व इज़्तिराब से उलट कर गले तक चढ़ जाएंगे, न बाहर निकलें न नीचे उतरें और आंखें ऊपर चढ़ जाएंगी। या येह मा'ना हैं

कुपफ़ार के दिल कुफ़्रो शक से ईमान व यकीन की तरफ़ पलट जाएंगे और आंखों से पर्दे उठ जाएंगे येह तो उस दिन का बयान है, आयत में

येह इशाद फ़रमाया गया कि वोह फ़रमां बरदार बन्दे जो ज़िक्रो ता'अत में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इबादत की अदा में सरगर्म रहते हैं बा

वुजूद इस हुस्ने अमल के इस रोज़ से खाइफ़ रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा न हो सका।

جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَجَدَ اللَّهُ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابَهُ ٥ وَاللَّهُ

उस के पास आया तो उसे कुछ न पाया⁹⁰ और **اللَّهُ** को अपने करीब पाया तो उस ने उस का हिसाब पूरा भर दिया और **اللَّهُ**

سَرِيعُ الْحِسَابِ ٦ أَوْ كُذِّبَتْ فِي بَحْرِ لَيْجٍ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ

जल्द हिसाब कर लेता है या⁹¹ जैसे अंधेरियां किसी कुन्डे के दरिया में⁹² उस के ऊपर मौज मौज के ऊपर और

مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ٧ طُلُبْتُ بَعْضَهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ

मौज उस के ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक⁹³ जब अपना हाथ निकाले

يَدَاهُ لَمْ يَكْدِرْهَا ٨ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ ٩

तो सुझाई देता मा'लूम न हो⁹⁴ और जिसे **اللَّهُ** नूर न दे उस के लिये कहीं नूर नहीं⁹⁵

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْبِغُ لَهُ مَنِ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَفَتْ ١٠

क्या तुम ने न देखा कि **اللَّهُ** की तस्बीह करते हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे⁹⁶ पर फैलाए

كُلُّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ١١ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ١٢ ١٣ وَاللَّهُ

सब ने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह और **اللَّهُ** उन के कामों को जानता है और **اللَّهُ** ही

مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ١٤ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ١٥ ١٦ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ

के लिये है सल्तनत आस्मानों और ज़मीन की और **اللَّهُ** ही की तरफ़ फिर जाना क्या तू ने न देखा कि **اللَّهُ**

يُرْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ

नर्म नर्म चलाता है बादल को⁹⁷ फिर उन्हें आपस में मिलाता है⁹⁸ फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उस के

90 : या'नी पानी समझ कर उस की तलाश में चला, जब वहां पहुंचा तो पानी का नामो निशान न था, ऐसे ही काफ़िर अपने खयाल में नेकियां करता है और समझता है कि **اللَّهُ** तआला से इस का सवाब पाएगा, जब अरसाते क़ियामत (क़ियामत के मैदान) में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि अज़ाबे अज़ीम में गिरिफ़्तार होगा और उस वक़्त उस की हसरत और उस का अन्दोह व ग़म उस प्यास से ब दरजहा ज़ियादा होगा। **91** : आ'माले कुफ़र की मिसाल ऐसी है **92** : समुन्दरों की गहराई में **93** : एक अंधेरा दरिया की गहराई का इस पर एक और अंधेरा मौजों के तराकुम (इकठ्ठा होने) का इस पर और अंधेरा बादलों की घिरी हुई घटा का, इन अंधेरियों की शिद्दत का येह आलम कि जो इस में हो वोह **94** : बा वुजूदे कि अपना हाथ निहायत ही करीब और अपने जिस्म का जुञ्च है जब वोह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी, ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वोह ए'तिकादे बातिल और क़ौले नाहक़ और अमले क़बीह की तारीकियों में गिरिफ़्तार है। बा'ज मुफ़स्सरीने ने फ़रमाया कि दरिया के कुन्डे और उस की गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जहल व शक व हैरत को जो काफ़िर के दिल पर छापे हुए हैं और बादलों से मोहर को जो उन के दिलों पर है तस्बीह दी गई। **95** : राहयाब वोही होता है जिस को वोह राह दे। **96** : जो आस्मान व ज़मीन के दरमियान में हैं **97** : जिस सर ज़मीन और जिन बिलाद की तरफ़ चाहे। **98** : और उन के मुतफ़रिक् टुकड़ों को यक़्जा कर देता है।

يَخْرُجُ مِنْ خَلَلِهِ ۚ وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ

बीच में से मींह निकलता है और उतारता है आस्मान से उस में जो बर्फ के पहाड़ हैं उन में से कुछ ओले⁹⁹

فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَنْ يَشَاءُ ۗ يَكَادُ سَنَابِرُقَهُ

फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे¹⁰⁰ और फेर देता है उन्हें जिस से चाहे¹⁰¹ करीब है कि उस की बिजली

يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۗ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ

की चमक आंख ले जाए¹⁰² **اللَّهُ** बदली करता है रात और दिन की¹⁰³ बेशक इस में

لَعِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۗ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ ۚ فَمِنْهُمْ

समझने का मक़ाम है निगाह वालों को और **اللَّهُ** ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया¹⁰⁴ तो उन में

مَنْ يَشِي عَلَى بَطْنِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ يَشِي عَلَى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ

कोई अपने पेट पर चलता है¹⁰⁵ और उन में कोई दो पांज पर चलता है¹⁰⁶ और उन में कोई

يَشِي عَلَى أَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

चार पांज पर चलता है¹⁰⁷ **اللَّهُ** बनाता है जो चाहे बेशक **اللَّهُ** सब कुछ

قَدِيرٌ ۗ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبِينَاتٍ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ

कर सकता है बेशक हम ने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें¹⁰⁸ और **اللَّهُ** हिदायत देता है जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۗ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ۗ ثُمَّ

सीधी राह दिखाए¹⁰⁹ और कहते हैं हम ईमान लाए **اللَّهُ** और रसूल पर और हुक़्म माना फिर

99 : इस के मा'ना या तो यह है कि जिस तरह ज़मीन में पथर के पहाड़ हैं ऐसे ही आस्मान में बर्फ के पहाड़ **اللَّهُ** तआला ने पैदा किये हैं और यह उस की कुदरत से कुछ बईद नहीं, उन पहाड़ों से ओले बरसाता है। या यह मा'ना है कि आस्मान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है या'नी ब कसरत ओले बरसाता है। (मारक و مرقوم) 100 : और जिस के जान व माल को चाहता है उन से हलाक व तबाह करता है। 101 : उस के जान व माल को महफूज़ रखता है। 102 : और रोशनी की तेज़ी से आंखों को बेकार कर दे। 103 : कि रात के बा'द दिन लाता है और दिन के बा'द रात। 104 : या'नी तमाम अज्जासे हैवान को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी इन सब की अस्ल है और यह सब वा वुजूद मुत्तहिदुल अस्ल होने के बाहम किस क़दर मुख़लिफुल हाल हैं, यह ख़ालिके आलम के इल्मो हिक़मत और उस के कमाले कुदरत की दलीले रोशन है। 105 : जैसे कि सांप और मछली और बहुत से कीड़े। 106 : जैसे कि आदमी और परिन्द। 107 : मिस्ल बहाइम और दरिन्दों के। 108 : या'नी कुरआने करीम जिस में हिदायत व अहक़ाम और हलाल व ह़राम का वाजेह बयान है। 109 : और सीधी राह जिस पर चलने से रिज़ाए इलाही व ने'मते आख़िरत मुयस्सर हो दीने इस्लाम है। आयात का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द यह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िर्क़ों में मुन्क़सिम हो गए, एक वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में तस्दीके हक़ की और बातिन में तक्ज़ीब करते रहे, वोह मुनाफ़िक़ हैं। दूसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मो'तकिद रहे, येह मुख़्लसीन हैं। तीसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तक्ज़ीब की और बातिन में भी वोह कुफ़्फ़ार हैं, उन का ज़िक्र बित्तरतीब फ़रमाया जाता है।

يَتَوَلَّى فَرِيقًا مِنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾ وَإِذَا

कुछ उन में के इस के बाद फिर जाते हैं¹¹⁰ और वोह मुसलमान नहीं¹¹¹ और जब

دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٨﴾

बुलाए जाएं **अल्लाह** और उस के रसूल की तरफ़ कि रसूल उन में फैसला फ़रमाए तो जभी उन का एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٢٩﴾ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ

और अगर उन की डिग्री हो (उन के हक़ में फैसला हो) तो उस की तरफ़ आएँ मानते हुए¹¹² क्या उन के दिलों में बीमारी है¹¹³

أَمْ أُرْتَابُونَ أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولَهُ ۗ بَلْ

या शक़ रखते हैं¹¹⁴ या येह डरते हैं कि **अल्लाह** व रसूल उन पर जुल्म करेंगे¹¹⁵ बल्कि

أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ

वोह खुद ही ज़ालिम हैं मुसलमानों की बात तो येही है¹¹⁶ जब **अल्लाह** और रसूल की तरफ़

وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ وَأُولَئِكَ هُمُ

बुलाए जाएँ कि रसूल उन में फैसला फ़रमाए तो अज़्र करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग

الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَأُولَئِكَ

मुराद को पहुंचे और जो हुक्म माने **अल्लाह** और उस के रसूल का और **अल्लाह** से डरे और परहेज़ ग़ारी करे तो येही

هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٢﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ

लोग काम्याब हैं और उन्होंने ने¹¹⁷ **अल्लाह** की क़सम खाई अपने हल्फ़ में हद की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे

110 : और अपने कौल की पाबन्दी नहीं करते । **111** : मुनाफ़िक़ हैं क्यूं कि उन के दिल उन की ज़बानों के मुवाफ़िक़ नहीं । **112** : कुपफ़ार व मुनाफ़िक़ीन बारहा तज़रिबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यकीन था कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का फैसला सरासर हक़ व अदल होता है इस लिये उन में जो सच्चा होता वोह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर उस का फैसला फ़रमाएँ और जो नाहक़ पर होता वोह जानता था कि रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की सच्ची अदालत से वोह अपनी ना जाइज़ मुराद नहीं पा सकता, इस लिये वोह हुज़ूर के फैसले से डरता और घबराता था । **शाने नुज़ूल** : बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ था, एक ज़मीन के मुआमले में इस का एक यहूदी से झग़डा था, यहूदी जानता था कि इस मुआमले में वोह सच्चा है और उस को यकीन था कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हक़ व अदल का फैसला फ़रमाते हैं, इस लिये उस ने ख़्वाहिश की, कि येह मुक़द्दमा हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَامُ** से फैसल (हल) कराया जाए, लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वोह बातिल पर है और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अदलो इन्साफ़ में किसी की रू रिआयत नहीं फ़रमाते, इस लिये वोह हुज़ूर के फैसले पर तो राजी न हुवा और का'ब बिन अशरफ़ यहूदी से फैसला कराने पर मुसिर हुवा और हुज़ूर की निस्वत कहने लगा कि वोह हम पर जुल्म करेंगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **113** : कुफ़र या निफ़ाक़ की । **114** : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत में । **115** : ऐसा तो है नहीं क्यूं कि येह वोह ख़ूब जानते हैं कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का फैसला हक़ से मुतावाजिज़ हो ही नहीं सकता और कोई बद दियात आप की अदालत से पराया हक़ मारने में काम्याब नहीं हो सकता, इसी वजह से वोह आप के फैसले से 'ए'राज़ करते हैं ।

116 : और उन को येह तरीक़े अदब लाज़िम है कि **117** : या'नी मुनाफ़िक़ीन ने । (मार)

لَيَخْرُجَنَّ ۖ قُلْ لَا تُقْسِمُوا طَاعَةً مَّعْرُوفَةً ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا

तो वोह जरूर जिहाद को निकलेंगे तुम फरमा दो कसमें न खाओ¹¹⁸ मुवाफिके शर्अ हुकम बरदारी चाहिये **اللَّهُ** जानता है जो

تَعْمَلُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

तुम करते हो¹¹⁹ तुम फरमाओ हुकम मानो **اللَّهُ** का और हुकम मानो रसूल का¹²⁰ फिर अगर तुम मुंह फेरो¹²¹ तो रसूल के जिम्मे वोही है

عَلَيْهِ مَا حَبَلٌ وَعَلَيْكُمْ مَا حَبَلْتُمْ ۗ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۗ وَمَا

जो उस पर लाजिम किया गया¹²² और तुम पर वोह है जिस का बोझ तुम पर रखा गया¹²³ और अगर रसूल की फरमां बरदारी करोगे राह पाओगे और

عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَدْعُ الْمُبِينُ ﴿٥٣﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَ

रसूल के जिम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना¹²⁴ **اللَّهُ** ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और

عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ

अच्छे काम किये¹²⁵ कि जरूर उन्हें ज़मीन में खिलाफत देगा¹²⁶ जैसी उन से पहलो

قَبْلِهِمْ ۗ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَدَلِهِمْ أَمْثَلًا وَأَنْ يَرْضَىٰ أَرْضًا يُرْتَضَىٰ لَكُمْ مِنْ بَدَلِ

को दी¹²⁷ और जरूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फरमाया है¹²⁸ और जरूर उन के अगले खौफ को

خَوْفِهِمْ أَمْثًا ۗ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ

अमन से बदल देगा¹²⁹ मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो इस के बा'द नाशुकी करे

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا

तो वोही लोग बे हुकम हैं और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की

118 : कि झूठी कसम गुनाह है। **119** : ज़बानी इताअत और अमली मुख़ालफ़त उस से कुछ छुपा नहीं। **120** : सच्चे दिल और सच्ची नियत से। **121** : रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की फरमां बरदारी से, तो इस में उन का कुछ ज़रूर नहीं। **122** : या'नी दीन की तबलीग़ और अहकामे इलाही का पहुंचा देना, इस को रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने अच्छी तरह अदा कर दिया और वोह अपने फ़र्ज से ओहदा बरआ हो चुके। **123** : या'नी रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की इताअत व फरमां बरदारी। **124** : चुनान्हे रसूले अकरम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने बहुत वाजेह तौर पर पहुंचा दिया। **125** शाने नुज़ूल : सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने वहुय नाज़िल होने से दस साल तक मक्कए मुकर्रमा में मअ अस्थाब के कियाम फरमाया और कुफ़्फ़ार की ईजाओं पर जो शबो रोज़ होती रहती थीं सब्र किया, फिर ब हुकमे इलाही मदीनए तय्यिबा को हिजरत फरमाई और अन्सार के मनाज़िल (घरों) को अपनी सुकूनत से सरफ़राज़ किया, मगर कुरैश इस पर भी बाज़ न आए, रोज़मर्रा उन की तरफ़ से जंग के ए'लान होते और तरह तरह की धम्कियां दी जातीं, अस्थाबे रसूल **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हर वक़्त ख़तरे में रहते और हथियार साथ रखते, एक रोज़ एक सहाबी ने फरमाया : कभी ऐसा भी ज़माना आएगा कि हमें अमन मुयस्सर हो और हथियारों के बार से हम सुबुक दोश हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई **126** : और बजाए कुफ़्फ़ार के तुम्हारी फरमां रवाई होगी। हदीस शरीफ़ में है कि सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया कि जिस जिस चीज़ पर शबो रोज़ गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा। **127** : हज़रते दावूद व सुलैमान वगैरा अम्बिया **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को और जैसी कि जबाबिरए मिस्र व शाम को हलाक कर के बनी इसराईल को खिलाफ़त दी और इन ममालिक पर उन को मुसल्लत किया। **128** : या'नी दीने इस्लाम को तमाम अद्यान पर ग़ालिब फरमाएगा। **129** : चुनान्हे येह वा'दा पूरा हुवा और सर ज़मीने

الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ

फरमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो हरगिज़ काफ़िरों को खयाल न करना कि वोह कहीं हमारे काबू से निकल जाएं

فِي الْأَرْضِ وَمَاؤُهُمُ النَّارُ ۖ وَلَيْسَ الْبَصِيرُ ﴿٥٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

ज़मीन में और उन का ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम ऐ ईमान

أَمْثُوا الْيَسْتَأْذِنُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْبَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ

वालो चाहिये कि तुम से इज़्ज़ लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम¹³⁰ और वोह जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे¹³¹

مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۖ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ

तीन वक़्त¹³² नमाज़े सुबह से पहले¹³³ और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो

مِّنَ الظَّهْرِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۖ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ لَيْسَ

दोपहर को¹³⁴ और नमाज़े इशा के बाद¹³⁵ येह तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं¹³⁶ इन

عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۖ طُوفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى

तीन के बाद कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उन पर¹³⁷ आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहां एक दूसरे

अरब से कुफ़र मिटा दिये गए, मुसल्मानों का तसल्लुत हुवा, मशरिफ़ व मगरिब के ममालिक **अब्बास** तअ़ाला ने उन के लिये फ़तह

फरमाए, अकासिरा के ममालिक व खज़ाइन उन के कब्जे में आए, दुन्या पर उन का रो'ब छा गया। **फ़ाएदा** : इस आयत में हज़रते अबू बक्र

सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** और आप के बाद होने वाले खुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की दलील है क्यूं कि इन के ज़माने में फुतूहाते अज़ीमा

हुई और किस्सा वगैरा मुलूक के ख़ज़ाइन (बादशाहों के ख़ज़ाने) मुसल्मानों के कब्जे में आए और अम्न व तम्कीन और दीन को गुलबा हासिल

हुवा। तिरमिज़ी व अबू दावूद की हदीस में है कि सय्यिदे आलम **سَلَّمَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया : ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल है फिर मुल्क

होगा। इस की तफ़सील येह है कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह और हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

की ख़िलाफ़त दस साल छ⁶ माह और हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त बारह साल और हज़रत अलियये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

की ख़िलाफ़त चार साल नव माह और हज़रते इमाम हसन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त छ⁶ माह हुई। (ख़ाज़न) **130** : और बाँदियां। **शाने**

नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि नबिय्ये करीम **سَلَّمَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने एक अनसारी गुलाम मुदलिज बिन अम्र को

दोपहर के वक़्त हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के बुलाने के लिये भेजा। वोह गुलाम वैसे ही हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मकान में चला गया,

जब कि हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बे तकल्लुफ़ अपने दौलत सराए में तशरीफ़ रखते थे, गुलाम के अचानक चले आने से आप के दिल में

खयाल हुवा कि काश गुलामों को इजाज़त ले कर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता। इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **131** :

बल्कि अभी करीबे बुलूग़ हैं। सिन्ने बुलूग़ हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के नज़्दीक लड़के के लिये अठ्ठारह साल और लड़की के

लिये सत्तरह साल और आम्माए इलमा के नज़्दीक लड़के और लड़की दोनों के लिये पन्दरह साल है। **132** : या'नी इन तीनों वक़्तों

में इजाज़त हासिल करें जिन का बयान इसी आयत में फरमाया जाता है। **133** : कि वोह वक़्त है ख़्वाब गाहों से उठने और शब ख़्वाबी का

लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का। **134** : कैलूला करने के लिये और तहबन्द बांध लेते हो। **135** : कि वोह वक़्त है बेदारी का

लिबास उतारने और ख़्वाब का लिबास पहनने का। **136** : कि इन अवक़ात में ख़ल्वत व तन्हाई होती है, बदन छुपाने का बहुत एहतियाम नहीं

होता, मुम्किन है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाए जिस के जाहिर होने से शर्म आती है। लिहाज़ा इन अवक़ात में गुलाम और बच्चे भी बे

इजाज़त दाख़िल न हों और इन के इलावा जवान लोग तमाम अवक़ात में इजाज़त हासिल करें किसी वक़्त भी बे इजाज़त दाख़िल न हों। (ख़ाज़न वगैरह)

137 : मस्अला : या'नी इन तीनों वक़्तों के सिवा बाक़ी अवक़ात में गुलाम और बच्चे बे इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्यूं कि वोह।

بَعْضٌ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾ وَإِذَا

के पास¹³⁸ **अल्लाह** यूँही बयान करता है तुम्हारे लिये आयतें और **अल्लाह** इल्मो हिकमत वाला है और जब

بَدَغِ الْأَطْفَالِ مِنْكُمْ الْحُلْمُ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ

तुम में लड़के¹³⁹ जवानी को पहुंच जाएं तो वोह भी इज्ज मांगें¹⁴⁰ जैसे उन के अगलों¹⁴¹ ने इज्ज

قَبْلِهِمْ ۗ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَ

मांगा **अल्लाह** यूँही बयान फरमाता है तुम से अपनी आयतें और **अल्लाह** इल्मो हिकमत वाला है और

الْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ

बूढ़ी खाना नशीन औरतें¹⁴² जिन्हें निकाह की आरजू नहीं उन पर कुछ गुनाह नहीं

أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۗ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ

कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जब कि सिंगार न चमकाएं¹⁴³ और इस से बचना¹⁴⁴ उन के लिये और

لَهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى

बेहतर है और **अल्लाह** सुनता जानता है न अन्धे पर तंगी¹⁴⁵ और न

الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا

लंगड़े पर मुजायका और न बीमार पर रोक और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी

مِنْ بِيُوتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بِيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ إِخْوَانِكُمْ

औलाद के घर¹⁴⁶ या अपने बाप के घर या अपनी मां के घर या अपने भाइयों के यहां

138 : काम व खिदमत के लिये, तो इन पर हर वक़्त इस्तीज़ान (इजाज़त लेने) का लाज़िम होना सबबे हरज होगा और शरअ में हरज मदफूअ (दूर किया गया) है। **139** (سارک) : या'नी आज़ाद। **140** : तमाम अवकात में **141** : उन से बड़े मर्दों **142** : जिन का सिन ज़ियादा हो चुका और औलाद होने की उम्र न रही और पीराना साली (बुढ़ापे) के बाइस **143** : और बाल सीना पिंडली वगैरा न खोलें। **144** : बालाई कपड़ों को पहने रहना। **145** शाने नुज़ूल : सईद बिन मुसय्यब **رضي الله تعالى عنه** से मरवी है कि सहाबए किराम नबिय्ये करीम **صلی الله علیه وسلم** के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियां नाबीना और बीमारों और अपाहजों को दे जाते जो इन आ'ज़ार के बाइस जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि इन के मकानों से खाने की चीजें ले कर खाएं, मगर वोह लोग इस को गवारा न करते ब ई खयाल कि शायद येह उन को दिल से पसन्द न हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें इस की इजाज़त दी गई। और एक कौल येह है कि अन्धे अपाहज और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो, इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई। और एक कौल येह है कि जब अन्धे नाबीना अपाहज किसी मुसल्मान के पास जाते और उस के पास इन के खिलाने के लिये कुछ न होता तो वोह इन्हें किसी रिश्तेदार के यहां खिलाने के लिये ले जाता, येह बात इन लोगों को गवारा न होती। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन्हें बताया गया कि इस में कोई हरज नहीं है। **146** : कि औलाद का घर अपना ही घर है। हदीस शरीफ में है कि सय्यिदे आलम **صلی الله تعالى علیه وسلم** ने फ़रमाया : तू और तेरा माल तेरे बाप का है। इसी तरह शोहर के लिये बीवी का और बीवी के लिये शोहर का घर भी अपना ही घर है।

أَوْ بِيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بِيُوتِ عَمَّتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ

या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहां या अपनी फूपियों के घर या अपने मामूओं

أَخْوَالِكُمْ أَوْ بِيُوتِ خَلَّتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ط

के यहां या अपनी खालाओं के घर या जहां की कुन्जियां तुम्हारे कब्जे में है¹⁴⁷ या अपने दोस्त के यहां¹⁴⁸

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَاكُلُوا جَمِيعًا وَأَشْتَاتًا ط فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا

तुम पर कोई इल्जाम नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग¹⁴⁹ फिर जब किसी घर में जाओ

فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةً طَيِّبَةً ط كَذَلِكَ

तो अपनों को सलाम करो¹⁵⁰ मिलते वक़्त की अच्छी दुआ **अल्लाह** के पास से मुबारक पाकीजा **अल्लाह** यूँही

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ

बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह**

آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ

और उस के रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिस के लिये जम्अ किये गए हों¹⁵¹ तो न जाएं जब तक

يَسْتَأْذِنُوا ط إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ

उन से इजाज़त न ले लें वोह जो तुम से इजाज़त मांगते हैं वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल

وَرَسُولِهِ ط فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ

पर ईमान लाते हैं¹⁵² फिर जब वोह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिये तो उन में जिसे तुम चाहो इजाज़त

147 : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنها** ने फ़रमाया कि इस से मुराद आदमी का वकील और उस का कार परदाज़ है। **148** : मा'ना येह

हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जाइज़ है ख़्वाह वोह मौजूद हों या न हों जब कि मा'लूम हो कि वोह इस से राज़ी हैं। सलफ़ (पहले के

लोगों) का तो येह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में पहुंचता तो उस की बांदी से उस का कीसा (रकम

रखने का थेला) त़लब करता और जो चाहता उस में से ले लेता, जब वोह दोस्त घर आता और बांदी उस को ख़बर देती तो इस खुशी में वोह

बांदी को आज़ाद कर देता। मगर इस ज़माने में येह फ़य्याज़ी कहाँ ! लिहाज़ा बे इजाज़त खाना न चाहिये। (مدارك و جلائين) **149** शाने नुज़ूल :

क़बीलए बनी लैस बिन अम्र के लोग तन्हा बिग़ैर मेहमान के खाना न खाते थे, कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुब्ह से शाम तक खाना लिये

बैठे रहते उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **150** मस्अला : जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल को सलाम करे और

उन लोगों को जो मकान में हों बशर्ते कि उन के दीन में ख़लल न हो। (غاران) **मस्अला** : अगर खाली मकान में दाख़िल हो जहां कोई नहीं

है तो कहे : "السّلام على السّي ورحمة الله تعالى وبركاته السّلام علينا وعلى عباد الله الصّالحين، السّلام على أهل النّبي ورحمة الله تعالى وبركاته" : हज़रते इब्ने अब्बास

رضي الله تعالى عنها ने फ़रमाया कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं। नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे :

صلى الله تعالى عليه وسلم صلى الله تعالى عليه وسلم (عفا شريف) | السّلام على رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم | السّلام على رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم

पर सलाम अर्ज़ करने की वजह येह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़दस जल्वा फ़रमा होती है। **151** : जैसे कि जिहाद और तदवीरे

مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾ لَا تَجْعَلُوا

दे दो और उन के लिये **अल्लाह** से मुआफी मांगो¹⁵³ बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है रसूल के

دُعَاءِ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۖ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ

पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है¹⁵⁴ बेशक **अल्लाह** जानता है जो

يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرٍ أَنْ

तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ ले कर¹⁵⁵ तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के खिलाफ़ करते हैं कि

تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ

उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे¹⁵⁶ या उन पर दर्दनाक अज़ाब पड़े¹⁵⁷ सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों

وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ

और ज़मीन में है बेशक वोह जानता है जिस हाल पर तुम हो¹⁵⁸ और उस दिन को जिस में उस की तरफ़ फेरे जाएंगे¹⁵⁹

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने ने किया और **अल्लाह** सब कुछ जानता है¹⁶⁰

﴿آياتها ٢٢﴾ ﴿سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ٢٢﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٦﴾

सूरए फुरक़ान मक्किय्या है, इस में सतत्तर आयतें और छ⁶ रूक़अ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

जंग और जुमुआ व इदैन और मशवरा और हर इज्तिमाअ जो **अल्लाह** के लिये हो। 152 : उन का इजाज़त चाहना निशाने फ़रमां बरदारी और दलीले सिद्दहते ईमान है। 153 : इस से मा'लूम हुवा कि अफ़ज़ल येही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त त़लब न करें। मस्अला : इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिये। (मारक) 154 : क्यूं कि जिस को रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पुकारें उस पर इजाबत व ता'मील वाजिब हो जाती है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब हाज़िर होने के लिये इजाज़त त़लब करे और इजाज़त से ही वापस हो। और एक मा'ना मुफ़स्सरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को निदा करे तो अदबो तक़ीम और तौकीरो ता'ज़ीम के साथ, आप के मुअज़्ज़म अल्काब से, नर्म आवाज़ के साथ, मुतवाज़िआना व मुन्कसिराना लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह" कह कर। 155 : शाने नुज़ूल : मुनाफ़िकीन पर रोज़े जुमुआ मस्जिद में ठहर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के ख़ुत्बे का सुनना गिरां होता था तो वोह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ ले कर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 156 : दुन्या में तकलीफ़ या क़ल्ल या ज़ल्ज़ले या और होलनाक हवादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का सख़्त हो कर मा'रिफ़ते इलाही से महरूम रहना। 157 : आख़िरत में। 158 : ईमान पर या निफ़ाक़ पर। 159 : जजा के लिये, और वोह दिन रोज़े क़ियामत है। 160 : उस से कुछ छुपा नहीं। 1 : सूरए फुरक़ान मक्किय्या है, इस में छ⁶ रूक़अ और सतत्तर आयतें और आठ सो बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सो तीन हर्फ़ हैं।